आय मांग व आड़ी मांग का नियम

Income and Cross Demand Law

Class: B.A.-Ist Sem

Dinesh Kumar Gupta
Assistant Professor (Economics)
Rajkiya Mahavidyalaya Amori, Champawat
E-mail : economicsdkg@gmail.com

आय मांग का नियम–

आय मे परिवर्तन के कारण मांग में होने वाला धनात्मक परिवर्तन आय मांग का नियम कहलाता है, यदि अन्य बाते समान हो। सामान्य वस्तुओं के सम्बन्ध में आय माँग वक्र धनात्मक ढाल वाला होता है अर्थात् बायें से दायें ऊपर चढ़ता हुआ होता है। जो यह स्पष्ट करता है कि उपभोक्ता की आय में प्रत्येक वृद्धि उसकी माँग में (अन्य बातों के समान रहने पर) भी वृद्धि करती है तथा इसके विपरीत आय की प्रत्येक कमी सामान्य दशाओं में माँग में भी कमी उत्पन्न करती है। पर निम्न कोटि/ गिफेन के सन्दर्भ मे आय एवं मांग में ऋणात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

रेखाचित्र के माध्यम से विश्लेषण

रेखाचित्र मे मांग रेखा धनात्मक ढाल युंक्त है। जो सामान्य वस्तुओं मे आय व मांग मे धनात्मक सम्बन्ध को व्यक्त करती है। तथा गिफेन वस्तु मे मांग वक्र का ढाल ऋणात्मक है।

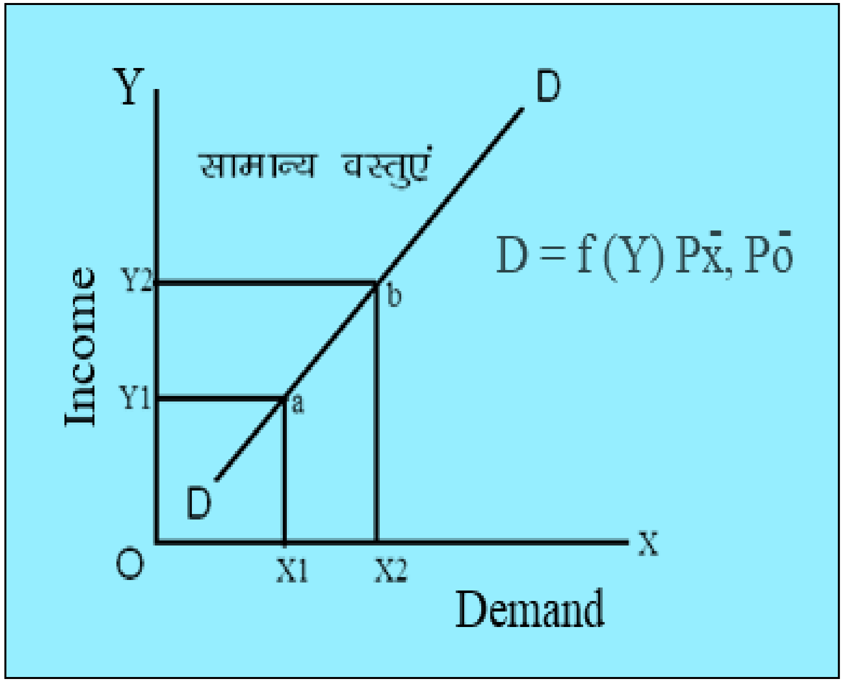

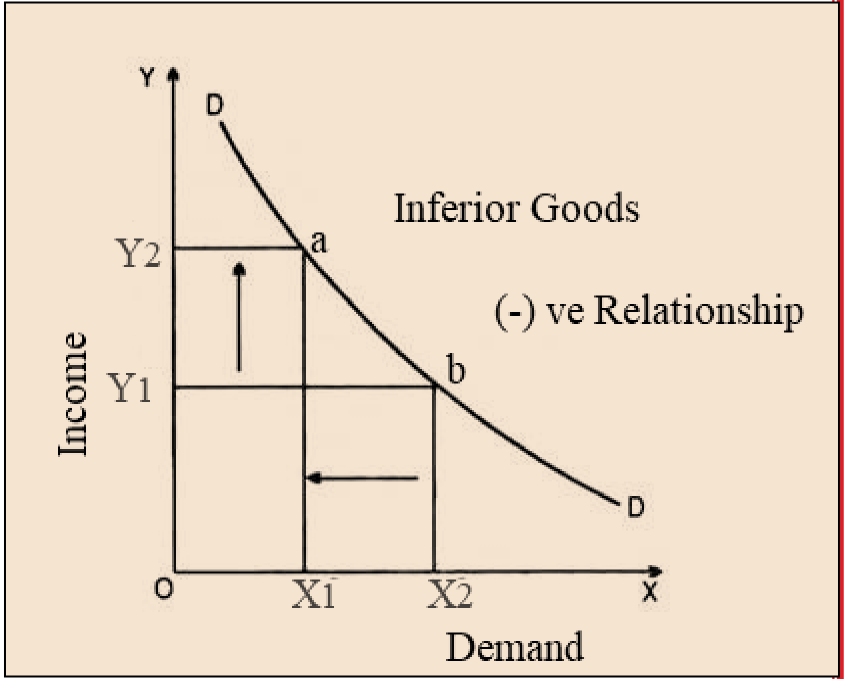

आड़ी मांग का नियम–

अन्य बातें समान रहने पर वस्तु X की कीमत में परिवर्तन होने से उसके सापेक्ष सम्बन्धित वस्तु Y की माँग में जो परिवर्तन होता है उसे आड़ी माँग का नियम (Cross Demand Law) कहते हैं । दूसरे शब्दों में, आड़ी माँग में एक वस्तु की कीमत का उसके सापेक्ष सम्बन्धित दूसरी वस्तु की माँग पर प्रभाव जाता है ।

$$Dx = f\,(Po)\;Px,\;Y$$

यसम्बन्धित वस्तुएँ दो प्रकार की हो सकती हैं–

1.स्थानापन्न वस्तुएँ (Substitutes Goods) स्थानापन्न वस्तुएँ वे हैं जो एक–दूसरे के सीान पर एक ही उद्देश्य के लिए प्रयोग की जाती हैं जैसे, चाय–कॉफी । ऐसी वस्तुओं में जब एक वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तब अन्य बातें समान रहने की दशा में (अर्थात् स्थानापन्न वस्तु की कीमत अपरिवर्तित रहने पर) स्थानापन्न वस्तु की माँग में वृद्धि हो जायेगी।

2. पूरक वस्तुएँ (Complementary Goods)– पूरक वस्तुएँ वे हैं जो किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक साथ प्रयोग की जाती हैं जैसे, स्कूटर–पैट्रोल। पूरक वस्तुओं की कीमत और खरीदी जाने वाली मात्रा में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।